International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-01-2020; Accepted: 05-02-2020; Published: 06-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 50-52

समकालीन हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श

डॉ० प्रीति अग्रवाल
Post-Doctoral fellow PGDAV Delhi University Delhi, Delhi, India

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। संरचनात्मक दृष्टि से भारत गांवों का देश है। भारत को कृषि प्रधान देश की संज्ञा भी दी गई है। लगभग 70ः भारतीय लोग किसान हैं। किसानों को देश की रीड की हड्डी कहना अतिश्योक्ति ना होगी। अनेक योजनाएं तो किसानों के हितों को ध्यान में रखकर बनाई गई लेकिन किसानों की दशा और दुर्दशा में कोई खास सुधार नजर नहीं आता। किसानों और उनके बाल बच्चों का भविष्य भी अंधेरे में है। किसान आज अनेकों संघर्षों से जूझ रहा है। आत्महत्या की ओर बढ़ रहा है। आज भारत के विभिन्न राज्यों में बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। किसानों की इन आत्महत्याओं के पीछे कर्ज का ही तो दुष्चक्र सबसे मुख्य है। महाजन बदल गए हैं शोषक का रूप भी बदल गया है लेकिन शोषण की की प्रवृत्ति वही है बैंकों द्वारा कर्ज प्राप्त कर यह किसान ऋण लेकर ट्रैक्टर खरीद लेते हैं कर्ज न चुकाने की स्थिति में आत्महत्या को मजबूर होते हैं। शोषण की प्रक्रिया पहले भी किसानों का रक्त पी रही थी और आज भी पी रही है।

प्रेमचंद के बाद अनेक रचनाकारों ने किसानों की समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे है उनमें समकालीन कथाकार शिव मूर्ति के उपन्यास, 'आखिरी छलांग', संजीव का फांस तथा पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव' प्रमुख है। पुराने उपन्यासों में प्रेमचंद का गोदान, फणीश्वर नाथ रेणु का 'परती परीकथा', सतीश चंद्र का 'कभी ना छोड़े खेत' और धरती धन ने अपना, नागार्जुन का 'बलचनमा', शिवप्रसाद सिंह का 'अलग अलग वैतरणी' और विवेकी राय का 'लोकऋण' प्रमुख है।

समकालीन हिंदी साहित्य में ऐसे कई लेखक है जो किसान समाज के प्रति प्रतिबद्ध नजर आते हैं। लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से किसानों के दुख दर्द उनके संघर्षों को वाणी दे रहे हैं। गुरदयाल सिंह, सूर्यनाथ सिंह, संजीव, महेश कटारे, पुन्नी सिंह, मदन मोहन, सत्यनारायण पटेल, चरण सिंह पथिक, कैलाश वनवासी, सुरेश कांटक, जयनंदन, शिवमूर्ति, पंकज सुबीर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आज का किसान कर्ज की समस्या से तो गिरा ही है साथ ही साथ खाद बिजली पानी की समस्याएं भी उसे परेशान कर रही हैं कभी प्राकृतिक आपदाएं तो कभी सरकारी नीतियों से त्रस्त है। फसलों का उचित मूल्य न मिल पाना भी आज एक गंभीर समस्या हो चुकी है। नीलकांत द्वारा लिखित उपन्यास 'एक बीघा खेत' चकबंदी और सीमांत किसान की कथा कहता है। इससे पूर्व नीलकांत ने 'बंधुआ रामदास' नामक उपन्यास लिखा था जिसमें किसान पुरुषोत्तम मात्र 51 रुपए उधार लेता है और उसे चुकाने तीन पीढ़ियां खेतिहर मजदूर बनकर संघर्ष भरा जीवन जीती है। कुर्मेंदु शिशिर का उपन्यास 'बहुत लंबी राह' (2003) इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपन्यास है इसमें ग्रामीण समस्याओं की विकृतियों और संघर्षों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। सन् 2006 में राजू शर्मा का चर्चित उपन्यास हलफनामे किसान आत्महत्या के साथ साथ जल संकट की समस्या को भी उकेरता है। 'हलफनामे' किसान आत्महत्या पर लिखा गया प्रथम उपन्यास है जो आंध्र प्रदेश के किसानी जीवन और उनके जल संकट की समस्या पर लिखा गया है। सूर्यदीप यादव ने 'जमीन' नामक उपन्यास की भूमिका में लिखा है –

''(1) जमीन किसी की निजी बपौती नहीं होती वह सार्वजनिक सर्व राष्ट्रीय बल्कि विश्व की धरोहर होती है। धरती या जमीन की गोद और आकाश की छत्रछाया के बिना हवा की कोख से असंख्य जीव सृष्टि में जन्म लेते हैं और उसे हम मान्य रखते हैं। स्वीकार करते हैं जिसे गैर की नाजायज चीज समझ कर अस्वीकार करते हैं उस जमीन की उपज यह कृति है। (5)''

सीमांत किसान को आर्थिक उदारीकरण की नीतियों ने किस प्रकार बर्बाद किया है उसका प्रभावशाली चित्रण शिवमूर्ति ने 'आखिरी छलांग' में किया है। विकास के नाम पर विनाश की कहानी कहता सुनील चतुर्वेदी का उपन्यास 'काली चाट' (2015) एक नई समस्या खेती का कंपनीकरण और नकदी फसलों के अतिरिक्त गेहूं और धान उपजाने वाले किसानों के कर्ज लेने और कर्ज न चुका पाने की स्थिति में किसानों की आत्महत्या करने की समस्याओं को उठाता है। बाजार के आने से नए तरह के बिचौलिए पैदा हुए हैं इन बिचौलियों की घुसपैठ सरकार के अंदर तक हो गई है। समकालीन हिंदी उपन्यासकार आज किसानों की सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति साथ ही उनकी समस्त समस्याओं को लेकर लगातार अपनी लेखनी के साथ उपस्थित हैं हालांकि इस विषय पर चाहे बहुत अधिक उपन्यास न लिखे गए हो लेकिन जो लिखे गए हैं अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं।

सूर्यनाथ सिंह का उपन्यास 'चलती चाकी' किसान और किसानों की खेती बाड़ी, पानी की समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास का पात्र निशांत दौड़ते भागते, छुपते छुपाते, बचते बचाते दौलतपुर में घड़ी भर के लिए ठहरता है और वहीं का होकर रह जाता है। दौलतपुर में किसानों की चिंताओं, समस्याओं को नजदीक से देखता है। समस्याओं के निदान के लिए अधिकारियों से मिलता है भागदौड़ करता है पुलिस जानता है कि अगर पानी इस तरह नीचे जाता रहा तो किसानों के लिए एक विकट समस्या खड़ी हो जाएगी। जब फसल करने के नए तरीकों पर विचार करता है। पानी की कमी को दूर करने के लिए ड्रिप ऐरिगेशन के द्वारा कम पानी में अधिक से अधिक फसल के लिए प्रेरित करता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि पंचायत स्तर पर भी जातिवाद, भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद की कमी नहीं है। श्वेतानंद (निशांत) पानी की कमी पूरी करने के लिए तालाबों की खुदाई आरंभ करवाता है तो एक तालाब तो खुदवा लेते हैं पर जब दूसरा आरंभ करते हैं तो मामला गांव की राजनीति में फंस जाता है।

राजू शर्मा का उपन्यास 'हलफनामे' किसान जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ उपन्यास है। स्वामी राम प्रसाद द्वारा एक छोटा किसान और उसका बेटा मकई राम एक बिजली साज है। बेटा

अपने पिता को किसानी करने से मना कर देता है और पिता पुत्र अपने अपने काम को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पूरा करते हैं। एक दिन मकई राम को खबर मिलती है कि उसके पिता ने आत्महत्या कर ली है। आत्महत्या के एवज में मुआवजा के लिए हलफनामा दाखिल करता है। उसका यह कदम उसके जीवन में भूचाल ले आता है। धीरे–धीरे उसके मुआवजे की अपील केस का रूप धारण कर लेती है उसके जीवन का सुख सब चला जाता है। रामप्रसाद लगातार पानी की कमी की समस्या से जूझ रहा होता है। वह कर्ज लेकर तीन बोअर वेल भी डलवाता है लेकिन पानी की कमी दूर नहीं हो पाती। लाला अपने स्वार्थ के लिए स्वामी राम प्रसाद की हत्या करवाता है और आत्महत्या की खबर फैला देता है। साहित्य समाज से ही विषय ग्रहण करता है। समाज में घट रही घटनाओं को ही वह अपनी रचनाओं में मुखर करता है। किस प्रकार राजनेता किसानों से सहानुभूति जताने के नाम पर राजनीति की रोटी सेंकना शुरू कर देते हैं। किसी की आत्महत्या को कैसे राजनेता अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बना लेते हैं इसका विस्तृत चित्रण उपन्यास में मिलता है।

संजीव का उपन्यास 'फांस' पिछले दो दशकों से बढ़ रही किसानों की आत्महत्या की समस्या को लेकर लिखा गया है। उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के गांव बनगांव का चित्रण किया गया है। लेकिन इसमें आंध्र प्रदेश व कर्नाटक के किसानों सहित भारत के उन सभी किसानों की कहानियां शामिल है, जिन्हें पहले जी एम बीजों का इस्तेमाल करने के लिए फुसलाया गया और फिर कर्ज दिया गया। प्राकृतिक आपदाओं और सूखे की मार ने किसानों की जिंदगी दूभर कर दी। कर्ज ने उन्हें आत्महत्या की ओर धकेल दिया। 'फांस' उपन्यास किसानों की समस्याओं की कथा भर नहीं है बल्कि यह उस घाव के नासूर बनने की कथा है जिससे हम लगातार मुंह छुपाते आए हैं। 'फांस' खतरे की घंटी भी है और आत्महत्या के विरुद्ध आत्मबल प्रदान करने वाली एक नई चेतना के दर्शन भी कराता हैं। इस उपन्यास में किसानों की मूलभूत समस्याओं खाद, पानी, बिजली, कर्ज की समस्या, फसलों का उचित मूल्य मिलना, आत्महत्या जैसे गंभीर मुद्दों को बड़ी ईमानदारी और बेबाकी से विचार किया गया है। उपन्यासकार ने लिखा है –

"(2) अगले महीने बैंक का २४ हजार का कर्ज अदा करना है। आज गुढ़ी पड़वा है– मराठी नव वर्ष। फर्स्ट क्लास डिनर हे आई"..... यह जो भात है न आई, इसमें यह जो बात है ना आई इसमें स्टार्च है इसका माड न फेंको तो चावल की सारी ताकत बची रहती है, फिर मावा! मावा है मावा! ताकत ही ताकत! मजबूती ही मजबूती... शुभा सामने आकर खड़ी हो गई तो झेप गया पूरा परिवार। शुभा ने तरस खाती जुबान से कहा– "आज तो कुछ कायदे की चीज बना लेती! चलो मैं देती पूरण पोली।" नहीं वहिणी कोई तो दिन आएगा, हम भी पूरण पोली और ढेर सारे पकवान बनाएंगे। आज रहने दो।"

मगर क्यों?"

'वह सुनील काका ने कहा है कि जब तक कर्ज ना उतार लो...। "समझी। अरे तुम मियां बीवी, तुम्हें तपस्या करनी हैं शोक से करो मगर मुलगियों को तो बख्श दो। (2) "

पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव' कृषकों को की पीड़ा को बड़ी बारीकी से चित्रित करता है। किसान जब तक लड़ सकता है सभी समस्याओं का सामना करता है और वे जब टूट जाता है तो हार कर मजदूर बन जाता है। जब बीवी के शरीर से आखरी गहना उतर जाता है। जब भी फसल ओले और बेमौसम बरसात की भेंट चढ़ जाती है तब पेट की आग किसान को मजदूर बनने पर विवश कर देती है। बीवी का हर गाना किसान इस मंशा से गिरवी रखता है कि फसल कटने पर छुड़ा लिया जाएगा पर अंततः साहूकार की तिजोरी का निवाला बन जाता है। उपन्यास का एक दृश्य है जब वह अपनी पत्नी का आखिरी जेवर उसके पांव की तोड़ी वह सुनार के पास बैठा पिघलवा रहा है। चांदी की हर रिसती बूंद के साथ जुड़ी मीठी यादें धुआं होती जा रही है, एक गरीब किसान की भावनाओं का भी कोई मोल नहीं। सुनार जानता है कि किसान बहुत मजबूरी में ही गहना तुड़वाता है। उसके आंसू भी उस से छिपे नहीं रहते। पर उसे क्रूर होना पड़ता है। कितना करुण है वह दृश्य। उपन्यास के पात्र रामप्रसाद के माध्यम से पंकज सुबीर बताते हैं कि आम किसान आज भी मौसम की मेहरबानी पर किस हद तक निर्भर है। मौसम का रुख पलटा नहीं कि किसान का जीवन तहस–नहस हो जाता है। उपन्यास में एक प्रसंग है –

"(3) कमला की तोड़ी बिक गई। बिकनी ही थी। छोटी जात के किसान की पत्नी के शरीर पर जेवर क्रमशः घटने के लिए होते हैं। और हर घटाव का एक भौतिक अंत शून्य होता है। जब परिवार की महिला के पास इन धातुओं का अंत हो जाता है तब तय हो जाता है कि किसानी करने वाली बस यह अंतिम पीढ़ी है, इसके बाद अब जो होंगे वह मजदूर होंगे। यह धातुएं बिक बिक कर किसान को मजदूर बनने से रोकती है। (3)"

किसान की सारी आर्थिक गतिविधियां कैसे उसकी छोटी जोत की फसल के चारों ओर केंद्रित रहती हैं और किन उम्मीदों के सहारे वह अपने आप को जीवित रखता है यह उपन्यास का कथानक है। उपन्यास ग्रामीण परिवेश और शहरी जीवन की झांकी को एक साथ पेश करते हुए आगे बढ़ता है। एक ओर मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र के एक गांव 'सूखा पानी' का एक आम किसान रामप्रसाद इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जिसकी आंखों में आने वाली फसल की उम्मीद है जवान है तो दूसरी तरफ सरकारी अमले का मुखिया श्री राम परिहार आई० ए० एस० नाम का एक पात्र है जो शहर का कलेक्टर है जिसमें इर्द गिर्द कुछ अधिकारी समाजसेवी नेता पत्रकार लोग हैं जो इस दौरान शहर में नगर उत्सव के आयोजन को लेकर सक्रिय हैं। राम प्रसाद की उम्मीदें तो बेमौसम बरसात की वजह से उजड़ जाती हैं वहीं दूसरी ओर नगर उत्सव का आयोजन पूरी ठसक के साथ किया जाता है। एक और हिंदुस्तान का किसान है जो दबा कुचला है दूसरी तरफ चमकता दमकता भारत है। जहां धन है अवसर है, तकनीकी प्रगति है। उपन्यासकार ग्रामीण व्यवस्था को कितनी निकटता से जानता है यह उपन्यास में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। किसान हितैषी सरकारी दावों के बाद भी क्यों एक किसान आत्महत्या कर रहा है यह देश के लिए चिंता का विषय है।

कुए की खुदाई के समय काली चाट उस पत्थर को कहते हैं जो इंसान परिश्रम से तोड़ा नहीं जा सकता और यह मान्यता भी है इस पत्थर के नीचे पानी का अनंत भंडार होता है। यह कालीचाट कहीं जमीन के नीचे किसान को मिल जाती है तो कहीं जमीन के ऊपर। सीताराम अपनी पांच बीघा जमीन को सिंचित करने के लिए कुआं खोदता है लेकिन कालीचाट आ जाती है। उसे तोड़ने के लिए डायनामाइट की जरूरत पड़ती है। इसके लिए वह बैंक से लोन मांगता है,बैंक मैनेजर उसे जमीन के कागज लाने को कहता है। जब पटवारी के पास जाता है पटवारी उससे 500 रूपये मांगता है। रुपयों के लिए वह मजदूरी करता है पटवारी को रुपए तो दे देता है लेकिन बैंक मैनेजर लोन देने से मना कर देता है। सीताराम हताश हो जाता है। सीताराम ट्यूबवेल लगवाने के लिए साहूकार के यहां जमीन गिरवी रख देता है। जमीन में चार जगह ट्यूबवेल खोदने के बाद भी पानी न निकलने पर वह दुखी हो जाता है। पांचवी जगह ट्यूबवेल खोलता है वहां पर भी काफी देर तक पानी नहीं निकलता तो बुरी तरह टूट कर हताश हो जाता है, इतने में ट्यूबवेल में पानी निकल आता है। जब उसके घर वाले खुशी मना रहे होते हैं वहीं दूसरी और कुएं में उसकी लाश लटकी दिखती है। यह मालवा के गांव सिंट्रानी मात्र

की कहानी नहीं है बल्कि देश के लगभग सभी गांव की दुखांत संघर्ष गाथा है। निर्देशक सुधांशु शर्मा ने इस उपन्यास को आधार बनाकर एक फिल्म का निर्माण किया है जो विभिन्न फिल्म फेस्टिवल में ग्यारह अवॉर्ड जीत चुकी है। किसानों के लिए सारे हालात ऐसे हैं कि जिंदा कैसा रहा जाए? खेती के नई–नई विधियों की जानकारी के अभाव में, दिन प्रतिदिन खाद एवं बिजली के मूल्यों में बढ़ोतरी होने के कारण किसान खेती से लागत का मूल्य भी नहीं निकाल पाता है। किसानों को लेकर सरकार की योजनाएं तो बनाई जा रही हैं लेकिन उनका क्रियान्वयन सही प्रकार से नहीं हो पा रहा है।

शिवमूर्ति के उपन्यास 'आखिरी छलांग' में किसान जीवन की समस्याओं का गंभीर चित्रण मिलता है। शिवमूर्ति स्वयं एक छोटे किसान परिवार से संबंध रखते हैं अतः उनके निजी अनुभवों ने इस उपन्यास को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है। 'आखिरी छलांग' में शिव मूर्ति ने जिन दो प्रमुख समस्याओं को उजागर किया है एक तो बेटे को इंजीनियर बनाने का बड़ा खर्च और दूसरा बेटी का शादी हेतु दहेज का प्रबंध। शिवमूर्ति पहलवान नामक पात्र के माध्यम से जागरूकता और साहस की छलांग दिखाना चाहते हैं जो संघर्षशील है –

"(4) कभी–कभी पहलवान सोचते हैं कि काश उन्हें सही समय पर किसी ने आगाह कर दिया होता कि खेतीबाड़ी से पेट भरने का आस छोड़ कर पढ़ाई लिखाई का भरोसा करें। मामूली चपरासी की जिंदगी औसत किसान की जिंदगी से बेहतर होती है – यह तब पता चल गया होता तो मिडिल, हाईस्कूल और इंटरमीडिएट तीनों प्रथम श्रेणी में पास करने के बावजूद भी इस खानदानी दलदल में क्यों फंसते? (4)"

पंकज सुबीर ने भी 'अकाल में उत्सव' में इसी प्रश्न को पूछा है –

"(5) आपको किसने कहा है खेती करो? मत करो अगर नुकसान का इतना ही डर है तो। जब कहा ही जाता है कि खेती तो मौसम के भरोसे खेले जाने वाला जुआ है, तो क्यों खेलते हो इस जुए को? किसी ने कहा है क्या आपसे? मत करो खेती कोई दूसरा काम करो। (5)"

समकालीन उपन्यास कारों ने केवल किसानों के जीवन के यथार्थ को ही प्रकट नहीं किया वरन् आत्महत्या के लिए किसानों को विवश करने वाली परिस्थितियों को भी समाज के सामने स्पष्ट किया है। कृषक समाज के लिए कृषि कोई धंधा नहीं बल्कि उनकी जीवनशैली है। उनकी रोजमर्रा की जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा है। किसान और धरती का रिश्ता अटूट है वह अपनी जमीन से सबसे अधिक लगाव रखते हैं वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों ने किसान के समक्ष अनेक सवाल खड़े कर दिए हैं। न किसानों और जीवन की समस्याएं हल हुई है ना ही भूमिहीन मजदूरों को श्रम शोषण से मुक्ति मिली है। साहित्य,कला, फिल्म सभी जगह उनकी उपस्थिति लगभग गायब होती जा रही है ऐसे में किसानों पर बात करना निहायत जरूरी है। वर्तमान समय में कृषि और किसान का अस्तित्व संकट में है। भारत के किसानों की आत्महत्याओं का दौर थम नहीं रहा है। मौसम खराब होने, सूखा पड़ने या अतिवृष्टि से यह संकट नहीं आया है। इसकी जड़ें ज्यादा गहरी है। किसानों की ये आत्महत्या उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियों पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है। किसानों की आत्महत्याओं के मामले में महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ प्रमुख रहे हैं। इनमें महाराष्ट्र शीर्ष पर है। कृषि के व्यवसायीकरण के कारण किसान को मजबूर नहीं अपनी जमीन से बेदखल होना पड़ता है। आर्थिक विषमता के कारण किसान को मजबूरन अपने अस्तित्व से दूर हो जाना पड़ता है। कृषकों की समस्याओं का कोई ठोस समाधान आज भी नहीं हुआ है। समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने समकालीन यथार्थ को बड़ी सुक्ष्मता से देखने, समझने और परखने का प्रयास किया है। इन उपन्यासों को पढ़कर यह कहना उचित होगा कि भारतीय गाँव साक्षात नर्क बने हुए हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश की कृषि संस्कृति को बनाए रखने के लिए सबसे पहले भू स्वामियों और प्रभु वर्गों को अपनी मानसिकता में बदलाव लाना पड़ेगा तथा कृषि संबंधित समस्या का सही समाधान खोजना पड़ेगा। उपन्यासों में सामंती आतंक के विरुद्ध संघर्ष का आवाहन है वहीं दूसरी तरफ किसानों के प्रति गहरी संवेदना भी उजागर होती है।

'तेरा संगी कोई नहीं' उपन्यास मिथिलेश्वर द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास किसान की त्रासदी का जीवंत आख्यान है। यह उपन्यास खेतों में किसानों से भावनात्मक जुड़ाव को प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास नई पीढ़ी के पलायन, किसान के अकेलेपन और किसान की अनिच्छा के बावजूद खेती की जमीन को बेचने की विवशता से उत्पन्न संत्रास के कारण आत्महत्या करने की कथा को पाठकों के समक्ष रखता है। मिथिलेश्वर ने यही दिखाया है कि समाज में कितना भी बदलाव क्यों न आ गया हो लेकिन किसान का अपनी मिट्टी और खेतों से मोह आज भी बरकरार है। खेतों को वह अपने अस्तित्व और अस्मिता से जोड़कर देखता है। खेतों की मिट्टी किसान को जीवनी शक्ति देती है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि स्वतन्त्रयोत्तर भारत की सरकारों ने ऐसी कोई नीतियाँ नहीं बनाई जिससे कृषि को एक लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सके। कृषि के माध्यम से किसान सम्मान पूर्वक अपना जीवन जी सके। यही कारण है कि युवा पीढ़ी किसान का जीवन जीना नहीं चाहती। युवा पीढ़ी मानती है कि किसान होना जीवन को नष्ट करने जैसा है। यही कारण है कि उपन्यास के प्रमुख पात्र बलेसर के लाख चाहने के बावजूद उसकी एक भी संतान खेती से नहीं जुड़ती। बलेसर के तीनों बेटे पढ़ाई के लिए शहर जाते हैं। बाद में बलेसर के तीनों बेटे खेत बेचकर शहर चलने का दबाव बनाते हैं जिसे बलेसर स्वीकार नहीं करता। अंत में लेखक दिखाते हैं कि जब बलेसर अपना खेत बेच देता हैं तो उसी बिके हुए बत्तीस बीघा खेत में वह मृत पाया जाता हैं। बलेसर को अपने बत्तीस बीघा से इतना मोह हैं, जुड़ाव है कि वह उससे अलगाव सहन नहीं कर पाता। कृषि क्षेत्र पर गहरा संकट है। कृषि पर संकट का अर्थ है किसान की आजीविका पर संकट। नई पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के कारण शहरों की ओर बढ़ रही है और किसानों को गांव में अकेला करती जा रही है। इस उपन्यास में बलेसर किसान का प्रतिनिधि पात्र बनकर हमारे सामने आता है। बलेसर की चुनौतियाँ और चिंता समूचे भारत के किसानों की समस्या है। उपन्यासकार ने दिखाया है कि किस प्रकार अपनों द्वारा दिए गए दुख, लकवा ग्रस्त पत्नी की विवशता से उत्पन्न वेदना, एकसरता और अजनबीपन बलेसर को मृत्यु की शरण में जाने को बाध्य करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जमीन, डॉ० सूर्यदीप यादव, सरिता प्रकाशन, नडियाद, 2006, पृ भूमिका से उद्धृत
2. फाँस संजीव, वाणी प्रकाशन, पृ० 62
3. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, पृ० 78
4. आखिरी छलांग, शिवमूर्ति, राजकमल प्रकाशन, पृ० 94
5. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, पृ० 94